سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ

सूरह अस्र मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

وَالْعَصْرِ ۙ (1)

काल (गुज़रते समय) की कसम !

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ (2)

निःसंदेह इंसान हानि में है।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ ۵

सिवाय (केवल) उनके जो ईमान लाए, और सत्कर्म किए, और एक - दूसरे को (आपस में) सत्य की उपदेश की,

وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ع (3)

और एक - दूसरे को (आपस में) धैर्य की उपदेश की।